T.D.C - Part-I Paper-I

Dr. Reshma Sultana
Assistant Professor
Dept of philosophy
Vaishali Mahila College B.R.A.B.U

Futuremate

Topic- चार्वाक के तत्वमीमांसा या भौतिकवाद (Charvaka's Metaphysics or Materialism.)

चार्वाक की तत्वमीमांसा इनकी ज्ञानमीमांसा (Epistemology) पर निर्भर है। इसके अनुसार प्रत्यक्ष ही यथार्थ ज्ञान का एकमात्र साधन है। इसलिए ये उन्हीं विषयों को वास्तविक मानते हैं जिनका प्रत्यक्षीकरण सम्भव है। प्रत्यक्ष केवल भौतिक पदार्थों का होता है। अतः चार्वाक के अनुसार पदार्थ या जड़ (matter) ही चरमतत्व (ultimate reality) है। इसीलिए इनके दर्शन को भौतिकवाद (Materialism) कहा जाता है।

किसी भी तत्वमीमांसा (Metaphysics) में मुख्यतः तीन विषयों पर विचार किया जाता है — विश्व (world of nature), आत्मा (soul) और ईश्वर (God)। चार्वाक-तत्वमीमांसा में भी इन तीनों विषयों पर विचार किया गया है। यहाँ इनपर अलग-अलग चार्वाक का मत प्रस्तुत किया जा रहा है।

चार्वाक का विश्वसम्बन्धी विचार → चार्वाक के अनुसार विश्व वास्तविक है क्योंकि इसका प्रत्यक्ष हमें होता है। अब प्रश्न है — विश्व की उत्पत्ति किन तत्वों से हुई है? इस प्रश्न का भारतीय दर्शन में सामान्य उत्तर यह है कि पाँच तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, और आकाश) से विश्व का निर्माण हुआ है। ये तत्व (constituent elements) माने जाते हैं। ये हैं — पृथ्वी, पानी,

PAGE

Scanned by CamScanner

हवा और अग्नि / इन्हीं के संयोग से विश्व के सभी पदार्थ बने हैं। यह आकाश को विश्व का ~~मूल~~ निर्मायक तत्व नहीं मानता, क्योंकि उसका प्रत्यक्ष ज्ञानेन्द्रियों द्वारा नहीं होता है। ये चार तत्व भौतिक हैं। इन्हीं तत्वों से सभी वस्तुएँ उत्पन्न हुई हैं। इन तत्वों को भौतिक कहा जाता है। इन्हीं तत्वों से सभी वस्तुएं उत्पन्न हुई हैं। इन तत्वों का विघटन होने से विश्व का नाश हो जाता है। प्राण (life) चेतन (consciousness) आदि भी भौतिक तत्वों से ही उत्पन्न हुई है। इसीलिए चार्वाक दर्शन भौतिकवादी कहा जाता है।

चार्वाक दर्शन सृष्टिवाद (creationism) में विश्वास नहीं करता। यह विश्व के ~~सृष्टि~~ रचयिता के रूप में ईश्वर या किसी अन्य अलौकिक सत्ता को नहीं मानता। इसके अनुसार प्रकृति और प्राकृतिक नियम ही विश्व की उत्पत्ति की व्याख्या के लिए ~~पूर्ण~~ पर्याप्त हैं। इसलिए इस दर्शन को प्रकृतिवादी (naturalistic) कहा जाता है। ~~वि~~ विश्व-प्रक्रिया में कोई प्रयोजन (purpose) न मानने के कारण चार्वाक दर्शन यन्त्रवादी (Mechanistic) दर्शन बन जाता है। यह दर्शन वस्तुवादी (realist) है क्योंकि इसके अनुसार विश्व के पदार्थों का अस्तित्व ज्ञाता या अनुभवकर्ता पर आश्रित नहीं है।